3. 1) परिवहन तकनीक में कई सुधारों ने दूर-दूर स्थानों पर कम लागत पर वस्तुओं को भेजना संभव बनाया है।

2) सूचना प्रोद्यौगिकी में सुधार से विभिन्न देश आपस में जुड़कर तुरंत सूचना प्राप्त कर लेते हैं।

3) इंटरनेट टैक्नालोजी से व्यापार में गति आई है।

4. कुप्रभाव

1) प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे उद्योगों जैसे बैटरी, प्लास्टिक, खिलौने, टायरों आदि के उत्पादकों पर बुरा प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप काफी इकाइयाँ बंद हो गईं।

2) श्रमिकों की बेरोज़गारी में वृद्धि।

3) श्रमिकों को अस्थाई आधार पर नियुक्त किया गया।

4) श्रमिकों को संरक्षण और लाभ नहीं मिल रहा।

5) श्रमिकों का अधिक घंटों तक काम करना आम बात हो गई।

5. सरकार की भूमिका -

1) वैश्वीकरण की नई नीति के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ने का प्रयत्न किया गया ताकि पूँजी, तकनीकी ज्ञान और अनुभव का विश्व के विभिन्न देशों से आदान-प्रदान हो सके।

2) सरकार ने माल के आयात पर से अनेक प्रतिबन्ध हटा दिए।

3) आयातित माल पर कर कम कर दिए।

4) विदेशी निवेशकों को भारत में निवेश के लिए प्रोत्साहन दिया गया।

5) तकनीकी क्षेत्र को हर ढंग से उन्नत करने का प्रयत्न किया गया।

6. 1) उपभोक्ताओं के सामने पहले से अधिक विकल्प हैं।

2) उपभोक्तओं को कम कीमत पर अधिक गुणवत्ता वाले उत्पाद उपलब्ध हो रहे हैं।

3) लोग पहले की तुलना में आज उच्चतर जीवन स्तर का मजा ले रहे हैं।

4) उद्योगों और सेवाओं में नये रोज़गार उत्पन्न हुए हैं।

5) उद्योगों को कच्चे माल इत्यादि की आपूर्ति करने वाली स्थानीय कंपनियाँ समृद्ध हुई हैं।

7. 1) विदेशी प्रतिस्पर्धा से देश के उत्पादकों की रक्षा करना।

2) स्वतंत्रता से पहले अंग्रेजो ने भारतीय उद्योग धन्धों को चौपट कर दिया था। स्वतंत्रता के बाद यहाँ भारतीय उद्योग स्थापित किए गए। उद्योगों के विकास के लिए विदेशी व्यापार पर रोक आवश्यक थी।

3) स्वतंत्रता के बाद भारत 562 टुकड़ों में बंटा हुआ था। यहाँ परिवहन तथा संचार के साधन अस्त व्यस्त थे।

4) स्वतंत्रता के शुरूआती वर्षों में भारत के वैदेशिक संबंध इतने सुदृढ़ नहीं बन पाए थे कि विश्व के अन्य देशों के साथ व्यापार विकसित हो सके।

8. 1) उदारीकरण तथा वैश्वीकरण की नीति अपनाने के फलस्वरूप निजी निवेश बढ़ने का अधिक अवसर मिला।

2) विदेशी विनिमय कोष (भंडार) बढ़ गया।

3) आई टी उद्योग का विस्तार हुआ।

4) सरकारी राजस्व में वृद्धि।

9. 1) विश्व व्यापार संगठन (डब्लू टी ओ) एक ऐसा संगठनहै जिसका उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाना और मुक्त व्यापार की सुविधा देना है।

2) कार्य : विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित नियमों को निर्धारित करता है और यह देखता है कि इन नियमों का पालन हो रहा है अथवा नहीं।

3) वास्तविकता - विकसित देशों ने अनुचित ढंग से व्यापार अवरोध को बरकरार रखा है। दूसरी ओर विश्व व्यापार संगठन के नियमों ने विकासशील देशों को व्यापार अवरोधों को हटाने के लिए विवश किया है।

10. 1)★ **विदेशी व्यापार** :- विदेशों से वस्तुओं को खरीदने और बेचने को विदेशी व्यापार कहते हैं।

★ **विदेशी निवेश** :- अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से जब बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ मेजबान देश में धन से उत्पादन इकाई की स्थापना करती है, उसे विदेशी निवेश कहते हैं।

★ इसके अन्तर्गत आयात और निर्यात की दोनों प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं।

★ विदेशी निवेश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किया गया पूँजी निवेश आता है।

★ यह उत्पादन के लिये अवसर प्रदान करता है।

★ यह पूँजी की कमी को दूर करता है।

11. 1) औद्योगिक क्षेत्रों जिन्हें विशेष आर्थिक क्षेत्र कहा जाता है की स्थापना की जा रही है।

2) विशेष आर्थिक क्षेत्रों में विश्व स्तरीय सुविधाएँ, बिजली, पानी, सड़क, परिवहन, भण्डारण, मनोरंजन और शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

3) विशेष आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने वाली कंपनियों को आरंभिक पाँच वर्षों तक कोई कर नहीं देना पड़ता है।

4) विदेशी निवेश आकर्षित करने हेतु सरकार ने श्रम-कानूनों में लचीलापन लाने की अनुमति दे दी है।

अर्थशास्त्र कक्षा 10वीं

अध्याय - 5

उपभोक्ता अधिकार

याद रखने योग्य बातें :-

1. उपभोक्ता - वह व्यक्ति जो बाजार से चीज़ें खरीद कर उनका उपयोग करता है।
2. उत्पादक - वह व्यक्ति जो चीज़ों का निर्माण करता है।
3. उपभोक्ता जागरूकता - उपभोक्ताओं का अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति सचेत होना।
4. उपभोक्ता अधिकार - इसमें उपभोक्ता हित से जुड़े प्रसंगों और वस्तुओं की जानकारी सम्मिलित है।
5. कोपरा - उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम 1986।
6. एफ ए ओ - खाद्य एवं कृषि संगठन।
7. डब्लू एच ओ - विश्व स्वास्थ्य संगठन
8. आई एस ओ - अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन
9. आई एस आई - भारतीय मानक संस्थान
10. बी एस आई - भारतीय मानक ब्यूरो
11. पी डी एस - सार्वजनिक वितरण प्रणाली
12. एन सी सी - राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग
13. रैल्फ नाडर - उपभोक्ता आन्दोलन का जन्मदाता।
14. मानकीकरण - उत्पादों की गुणवत्ता, आकार तथा बनावट निश्चित करने की प्रक्रिया।